

١١٦

وَمَنْ يَقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُؤْتِرْهَا

और जो इरमांभरदार रहे तुममेंसे अल्लाह और उसके रसूलका, और करे करनेके काम, तो देंगे हम

أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا ۝ يٰنِسَاءَ النَّبِيِّ

उसका धवाभ दूना. और तैयार कर लिया है हमने उनके लिये धज्जतवाली रोजी (३१) औं आं उजरतकी भीभियो !

لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ اِنْ اَتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ

तुम नहीं हो और किसी औरतोंकी तरह, अगर भुदासे डरती रहो, तो मत लोच पैदा करो भात करनेमें

فِي طَمَعِ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝ وَقُرْنَ

कि ललयाअे वोड जिसके दिलमें भीमारी है, और बोलती रहो अरणी बोली (३२) और ढहरी

فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُولَىٰ وَاَقِمْنَ

रहा करो अपने घरोंमें और न बनसंवर कर इरो अगली ज़ाडिख्यतकी तरह, और पाभन्ड रहो

الصَّلٰوةَ وَاتَيْنَ الرَّكُوٰةَ وَاَطَعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اِنَّمَّا يَرِيْدُ

नमाजकी, और देती रहो उकातको, और कडा मानती रहो अल्लाह और उसके रसूलका, यही याडता है

اللّٰهُ لِيُدْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ

अल्लाह कि दूर कर दे तुमसे डर नापाकीको. औं नभीके घरानो ! और पाक कर दे तुम्हें

تَطْهِيرًا ۝ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَ

भुभ (३३) और याद करती रहो जो तिलावतकी जाती हैं तुम्हारे घरोंमें अल्लाहकी आयतें, और

١١٧

الْحِكْمَةَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ

डिकमत. भेशक अल्लाह लतीफ़ भाभभर है (३४) भिलाशुभल मुसल्मान मर्द और मुसल्मान औरतें

وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ

और धिमानवाले मर्द और धिमानवाली औरतें, और धिबादत गुजार मर्द और धिबादत गुजार औरतें, और सख्ये मर्द

وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْحٰشِعِيْنَ وَالْحٰشِعٰتِ

और सख्यी औरतें, और इरमांभरदार मर्द और इरमांभरदार औरतें, और भुशूअवाले मर्द और भुशूअवाली औरतें,

وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصّٰابِيِيْنَ وَالصّٰابِيٰتِ وَ

और सडका देनेवाले मर्द और सडका देनेवाली औरतें, और रोजादार मर्द और रोजादार औरतें, और

الْحَفِظِينَ فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَ

अपनी शर्मगाओंकी निगेडबानी करनेवाले मर्द और निगेडबानी करनेवाली औरतें, और अल्लाहकी बछोत याद करनेवाले मर्द और याद करने

الذَّكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ﴿۳۵﴾ وَمَا كَانَ

वाली औरतें, तैयार कर दिया है अल्लाहने उनके लिये मग्फिरत, और बडे षवाबको (उप) और नहीं है

لِلْمُؤْمِنِينَ وَلَا الْمُؤْمِنَاتِ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ

किसी मो'मिन न मो'मिनाको हक, जब कि हुकम दे दिया अल्लाह और उसके रसूलने किसी अन्नका, कि रह जाये उन्हें कुछ

لَهُمُ الْخَيْرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ

भी छन्तियार अपने मुआमलेका. और जो नाकरमानी करे अल्लाह और उसके रसूलकी, तो भेशक बहक

ضَلًّا مُبِينًا ﴿۳۶﴾ وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ

गया अल्लानिया (उह) और जब कडा करते तुम उसे जिस पर छन्आम करमाया अल्लाहने, और छन्आम किया तुमने,

عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفَى فِي نَفْسِكَ

कि रोके रहो अपने जिम्मे अपनी भीवीकी, और दरा करो अल्लाहकी, और छुपाते रहे तुम अपने दिलमें

مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا

जिसको अल्लाह जाहिर कर देनेवाला है, और तुम भयाव करते थे लोगोंका, और अल्लाहका ज़्यादा हक है कि उसीकी डरते रहो. फिर जब

قَضَى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

पूरी कर ली जैहने अपनी गरज उससे, तो निकाह कर ली दिया हमने तुम्हारा उससे, ताकि न रह जाये मुसल्मानों पर

حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ

कोई हर्ज अपने मुंड बोले बेटोंकी भीबियोंमें उस वक्त भी, कि पूरी करली उनसे गरज, और अल्लाहका हुकम

اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿۳۷﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ

हो कर रहा (उठ) नहीं है नबी पर कोई हर्ज, उसमें जिसे फरीजा बनाया अल्लाहने उनके लिये.

لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا

अल्लाहका हस्तूर रहा उनमें जो गुजरे पडले. और अल्लाहका हुकम तकदीरका

مَقْدُورًا ﴿۳۸﴾ الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا

दिभा है (उट) जो पडोयाते रहे अल्लाहके पैगामोंकी, और डरते रहे उसे, और न

يَحْشُونَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿۳۱﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ

उरे किसीको अट्टाहाके सिवा. और अट्टाहा काफ़ी है डिहाभ लेनेवाला (उ८) “नहीं हें मुहम्मद

أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَ

किसीके भी बाप तुम मट्टोंसे, लेकिन अट्टाहाके रसूल, और सारे नबियोंमें पिछले जमानेवाले.” और

۳۱-

كَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿۳۲﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْكُرُوا

अट्टाहा उर अकको ज्ञानता रहा (४०) ऐ ईमानवालो ! याद करो

اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿۳۳﴾ وَسَبِّحْهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿۳۴﴾ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيٰ

अट्टाहाकी, बहुतेत याद (४१) और पाकी भोवो उसकी सुब्हो शाम (४२) वोही है जो दुइद भेजे

عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ وَكَانَ

तुम पर, और उसके इरिशते, ताकि निकाल रभे तुम्हें अंधेरियोंसे रोशनीकी तरफ़. और वोड

بِالنُّومِينَ رَحِيمًا ﴿۳۵﴾ حَبِيبُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ وَأَعَدَّ لَهُمْ

सुसल्मानोंके लिये रहमतवाला रहा, उनकी दुआअे मुलाकात है, जब मिलेगी उसको, के ‘सलाम’. और तैयार कर रभा हें

أَجْرًا كَرِيمًا ﴿۳۶﴾ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَ

उनके लिये बाईज्जत धवाभ (४४) ऐ आं उजरत ! भेशक भेजा उमने तुमको उर जगडका यश्मदीद गवाड, और भुशाभबरी देनेवाले,

نَذِيرًا ﴿۳۷﴾ وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنٍ وَسِرَاجًا مُّنِيرًا ﴿۳۸﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ

और उर सुनानेवाले (४५) और भुलानेवाले अट्टाहाकी तरफ़ उसके हुकमसे, और रोशन करनेवाला सूरज (४६) और भुशाभबरी दो ईमान

بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ فَضْلًا كَبِيرًا ﴿۳۹﴾ وَلَا تَطْعَمِ الْكُفْرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ

वालोंको, कि भिलाशुभउ उनके लिये अट्टाहाकी तरफ़से भडा इज्जल है (४७) और न कडा मानना काफ़िरों और मुनाफ़िओंका,

وَدَعَرَأْذُهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ﴿۴۰﴾ يَا أَيُّهَا

और उनके ईजा देने पर भुद हर गुजर कर दो, और भरोसा रभो अट्टाहा पर. और अट्टाहा काफ़ी कारसाज है (४८) ऐ

الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ

ईमानवालो ! जब निकाह कर लिया तुमने ईमानवाली औरतोंसे, फिर तलाक दे दी उन्हें, कब्ले ईसके कि

أَنْ تَسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَ لَهَا فَمَتَّعُوهُنَّ

उन्हें छाथ लगाओ, तो नहीं है तुम्हारे लिये उन पर कुछ ईदत, कि तुम उसे शुमार करो. तो उन्हें कुछ पूंज दे दो

وَسَرَّحَوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ

और छोड दो भुभीसे (४८) ओ आं उजरत ! बेशक उदाल कर दिया उमने तुम्हारे लिये तुम्हारी भीबियां,

الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ

जिनका मडर तुम दे ही युके, और जिन पर मालिकाना कब्जा कर लिया तुम्हारे हाथोंने, जिनहें माले गनीमतमें दिया तुम्हें अल्लाउने,

وَبَدَّتْ عَمَّكَ وَبَدَّتْ عَمَّتِكَ وَبَدَّتْ خَالَكَ وَبَدَّتْ خَلَّتِكَ

और तुम्हारे ययाकी बेटियां और तुम्हारी झूकी बेटियां, और तुम्हारे मामूकी बेटियां और तुम्हारी जालाकी बेटियां,

الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَأَمْرًا مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ

जिनहोंने डिजरतकी तुम्हारे साथ. और र्थमानवाली औरत, अगर वोड दे डाले अपनेको आं उजरतके लिये.

إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

अगर याहा आं उजरतने भी, कि निकाड करवें उससे. सिर्फ तुम्हारे लिये हे सारे मुसलमानोंसे अलग.

قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ

बेशक उमने जान लिया जो मुकरर कर दिया हे उन पर उनकी भीबियोंके बारेमें, और उनकी लौंडियोंके बारेमें,

لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَفُورًا رَحِيمًا ۝ تَرْجِي

ताकि न रड ज़ाओ तुम पर कोर्र तंगी. और अल्लाउ गडूररहीम हे (५०) उटाओ रभो

مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُتَوَى إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۗ وَمَنْ ابْتِغَيْتَ مِمَّنْ

जिसको याओ उनमेंसे, और ठिकाना दो अपने पास जिसे याओ. और जिसकी तुमने ज्वाडिशकी उन

عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقْرَأَ عَنِهُنَّ وَلَا

मेंसे जिनहें मा'जूल कर दिया था, तो तुम पर कोर्र उर्र नहीं हे. यह ज़्यादा करीब हे कि उंडी हों उनकी आंभें, और न

يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي

रंज करें और भुश रहें, जो कुछ दे दिया तुमने, सभकी सभ. और अल्लाउ जानता हे जो कुछ तुम

قُلُوبِكُمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ

लोगोंके दिलोंमें हे. और अल्लाउ र्थलमवाला छिलमवाला हे (५१) नहीं उदाल हें तुम्हें औरतें उनके

بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ

बा'द, और न यह कि उनकी जगड पर लाओ दूसरी भीबियां गो अरथी लगे तुम्हें उनकी भुभसूरती,

كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝۵۱ إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ

उर थीज पर निगरां हे (५५) बेशक अल्लाह और उसके सारे इरिशते दुर्रद भेजते रडते

عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

हें आं डजरत पर. ऐ धिमानवालो ! तुम भी दुर्रद भेजो उन पर, और भुब सलाम अर्र करो (५६)

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَ

बिलाशुभड जो दुभ हे अल्लाह और उसके रसूलको, इटकार दिया उनहें अल्लाहने दुन्या व आभिरत

الْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ

भे, और तेयार कर लिया हे उनके लिये रुखा करनेवाला अजाब (५७) और जो दुभ हे धिमानवालों

وَالْمُؤْمِنَاتِ بغيرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدْ احْتَسَبُوا بِهِنَّ كَمَا وَهَمُوا بِنِسَائِهِنَّ ۝

और धिमानवालियोंको, बगैर कुछ किये, तो बेशक उनहेंने बार लिया भोडतानका, और भुबे गुनाडका (५८)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ

ऐ आं डजरत ! केड दो अपनी भीबियों और बेटियों और मुसल्मानोंकी औरतोंको, कि डाल रभा करे

عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِئِبِهِنَّ ذٰلِكَ اَدْنَىٰ اَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ

अपने येडरों पर अपनी यादरे, यड ज़्यादा करीब हे कि पडथान ली ज़अे, तो सताई न ज़अे.

وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ لَيْنَ لَمْ يَنْتَهِ السُّفُفُونَ وَالَّذِينَ

और अल्लाह गडूररडीम हे (५८) यकीनन अगर भाज न आये मुनाकिक लोग, और जिनके

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالرَّجْفُونَ فِي السِّدِّينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ

दिलोंमें भीमारी हे, और जूटी गप उडानेवाले मदीनेमें, तो डम डरर मुसल्लत कर हेगे तुभे उन

ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۝ مَلْعُونِينَ ۝ اَيْنَمَا تُقِفُوا

पर, इर न पडोसी रड ज़अेगे तुभडारे उसमें, मगर कुछ दिन (६०) सभके सभ ला'नती.. अब जडां भिले

أُخِذُوا وَقُتِلُوا تَقْتِيلًا ۝ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ

धर लिये गअे और काट कर रभ दिये गअे (६१) अल्लाडका दस्तूर रडा उनमें भी जो गुजर युके

قَبْلُ وَلَنْ يَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝ يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ

पडले, और न पाओगे अल्लाडके दस्तूरमें अदल बदल (६२) पूछते हे लोग तुमसे कयामत

السَّاعَةِ ۱۳ قُلْ إِنَّمَا عَلَّمْتُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يَدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ

के बारेमें, केह दो कि उसका ठल्म अल्लाह लीके पास है, और क्या अटकल है तुम्हें, मुम्किन है कि क्यामत

تَكُونُ قَرِيبًا ۱۴ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَآمَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۱۵

नजदीक ली हो (६३) बेशक अल्लाहने फिटकार दिया काफ़िरोको, और तैयार कर रभा है उनके लिये दहकती आग (६४)

خُلْدِيْنَ فِيهَا أَبَدًا لَا يَمُودُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۱۶ يَوْمَ تَقْلَبُ

रहनेवाले उसमें हमेशा हमेशा. न पाओगे यार न मददगार (६५) जिस दिन

وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا

उल्टे पुल्टे जाओगे उनके चेहरे जहन्नममें, कहेंगे “अे काश हमने कडा माना होता अल्लाहका, और कडा माना होता

الرَّسُولَ ۱۷ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا

रसूलका” (६६) और बोल पडे कि “परवरदिगारा हमने कडा माना था अपने सरदारों और बडे लोगोका, तो उन्होंने लुवा

السَّبِيلَ ۱۸ رَبَّنَا إِنَّهُمْ ضَعُفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمْ لَعْنًا

दिया हमें रास्ता (६७) परवरदिगारा हे उन्हें हूना अजाब, और मार उन पर बडी

كَبِيرًا ۱۹ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَكَبَّرُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَى

फिटकार” (६८) अे ईमानवालो ! न हो जाओ उनकी तरफ जिन्होंने सताया मूसाको, तो बरी

فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۲۰ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

इरमा दिया उन्हें अल्लाहने इससे जो वोह केहते थे. और वोह अल्लाहके नजदीक आबड़वाले थे (६९) अे ईमान

آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۲۱ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ

वालो ! डरो अल्लाहको, और बोला करो दुरुस्त बोली (७०) कि दुरुस्त कर दे अल्लाह तुम्हारे आ'मालको,

وَيَعْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا

और बप्श दे तुम्हारे गुनाह. और जो कडा माने अल्लाह और उसके रसूलका, तो बेशक कामयाब हुवा बडी

عَظِيمًا ۲۲ إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ

कामयाबी (७१) बेशक पेश इरमाया हमने अमानतको आरमानों और जमीन और पहाडों पर,

فَابْتَأَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ

तो ईन्कार कर दिया सबने कि यह भार लें, और डर गअे उससे. और उठा लिया उसको ईन्सानने. बेशक वोह

كَانَ ظَلَمًا جَهْلًا ۱۷۲ لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ

जडाकश नादान हे (७२) ताकि अजाब हे अल्लाह मुनाफिक मर्दों और निडाकवाली औरतोंको,

وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَ

और मुशिरक मर्दों और शिरकवाली औरतोंको, और तोबा कबूल करे अल्लाह, मो'मिन मर्द और

الْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۱۷۳

मो'मिना औरतोंकी. और अल्लाह गफूररहीम हे (७३)



सूरसे सबा मक्किया

नामसे अल्लाहके बडा महरबान बप्शनेवाला

आयात ५४ रुकूअ ६

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ

सारी फुबियां अल्लाहके विये, वोड जिसका हे जो कुछ आस्मानोंमें हे और जो कुछ जमीनमें हे, और उसीकी

الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۱ ۝ يَعْلَمُ مَا يَلْبِغُ فِي

उम्द हे आभिरतमें. और वोही छिकमतवाला बाबबर हे (१) जानता हे जो कुछ दाबिल छो

الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ

जमीनमें, और जो निकल पडे उससे, और जो कुछ उतरे आस्मानसे, और जो कुछ यहे

فِيهَا ۖ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۱ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَآتَيْنَا

उसमें, और वोही रहीम गहर हे (२) और बोले जिन्होंने कुक किया हे, कि न आयेगी

السَّاعَةَ ۖ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عِلْمُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ

उस पर क्यामत. केड हो, कि "नहीं क्या मेरे आविमुल गैब रबकी कसम, जरूर आयेगी तुम्हारे पास." नहीं गाएँब

عَنْهُ مَثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ

हे उससे जरा बराबर, आस्मानोंमें और न जमीनमें, और न उससे छोटी

مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۖ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ

थीज, और न बडी, मगर साइ बयान करनेवाली किताबमें हे (३) ताकि षवाब हे उन्हें जो

آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ تَغْفِرَةٌ ۖ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۱ ۝

ईमान लाअे और नेकियांकी. उन्हेंके विये मजिरत, और बाईज्जत रोजी हे (४)

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن

और जिन्होंने कोशिशकी हमारी आयतोंमें हरानेके लिये, उन्हींके लिये दहनाक सपत्ती

رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۝ وَيَذَرَى الَّذِينَ أَنزَلْنَا لَهُمُ الْكُتُبَ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ أُولَٰئِكَ

का अजाब है (५) और देष रहे हैं जिनको ईल्म दिया गया है, कि जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ

مِّن دَرَبِكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝

तुम्हारे रबकी तरफसे, वोह उक है. और बताता है ईज़्जतवाले उम्द वालेकी राह (६)

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُوكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ إِذَا

और बोले "जिन्होंने कुफ़ किया है, कि क्या हम बता दें तुम्हें, ऐसा शम्स जो भबर देता है तुम्हें, कि जब

مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ۚ إِنَّكُمْ لَعَفَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ أَفَتَرَىٰ عَلَىٰ

रेजा रेजा कर दिये जाओगे तुम बिल्कुल, तो तुम नये जनममें ढोगे (७) क्या गढ लिया है

اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي

अल्वाह पर जूट, या उसे जूनन है." बल्कि जो नहीं मानते आभिरतको, वोही

الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبَعِيدِ ۝ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ

अजाबमें, और दूरकी गुमराहीमें हैं (८) तो क्या नहीं नजरकी ? उसकी तरफ जो उनके आगे

وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِن شَاءَ نَحْصِفْ بِهِمْ

और पीछे आस्मान व जमीन है. अगर हम चाहें तो धंसादें उन्हें

الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطَ عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِن فِي ذَٰلِكَ

जमीनमें, या गिरादें उन पर अेक टुकडा आस्मानसे. बेशक ईसमें जर

لَآيَةٍ لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۚ

निशानी है, हर तवज्जोह करनेवाले बन्देके लिये (९) और बेशक दे रभा था हमने दावूदको अपनी तरफसे इज़्जल.

يُجِبَالٍ أَوْ يَمِينٍ مَّعَهُ وَالطَّيْرِ ۚ وَكَانَ لَهُ الْحُدَيْدُ ۚ أَن أَعْمَلَ

कि औ पहाडो अल्वाहकी तस्बीह करो दावूदके साथ, और परिन्दोंको भी. और नर्म कर दिया हमने उनके लिये लोहेको (१०) कि बनाओ

سِبْغَتٍ وَقَدِّرْ فِي السَّرْدِ ۚ وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ

कुशादा जर हैं, और यकसा नियत रभो कडियोंके जोडनेमें, और करते रहो नेकी. बेशक मैं, जो कुछ करो

سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿۱۶﴾ ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۗ وَهَلْ نُجِزِي إِلَّا

थोडीसी बेरियां (१६) यह सजा दी हमने उन्हें जो उन्होंने कुफ़ किया। और हम नहीं सजा देते, मगर

الْكَفُورَ ﴿۱۷﴾ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَىٰ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا

नाशुकें को (१७) और कर दिया हमने उनके दरमियान, और उन आबादियोंके दरमियान जिनमें हमने बरकत दे रभी है

قُرَىٰ ظَاهِرَةً ۗ وَقَدَرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سَيْرًا فِيهَا لَيَالِيًا وَأَيَّامًا

भुली राह पर, और अन्हाजे पर रभा हमने उनमें सफ़रको, कि यवो क़िरो छनमें रात दिन

أَمْنِينَ ﴿۱۸﴾ فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ

अमनो अमानसे (१८) क़िर उन्होंने दूआकी कि परवरदिगारा दूर कर दे हमारी मन्जिलोंको, और भुरा किया भुद अपना,

فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَمَرَّنَاهُمْ كُلَّ مَمَرٍ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ

तो बना दिया हमने उन्हें क़डानियां, और तितर बितर कर दिया उन्हें बिल्कुल. भेशक उसमें ज़र

لَايَةٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ

निशानियां हैं हर सभ्र करनेवाले शुक्रगुजारके लिये (१९) और वाकेई सय्या कर दिभाया उन पर छबलीसने

ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۰﴾ وَمَا كَانَ لَهُ

अपना गुमान, युना-ये उन्होंने पेरवीकी उसकी, मगर अक गिरोह मुसल्मानका (२०) और न था उसे

عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ ۗ مَنِ

उन पर कोई काबू, मगर ताकि हम छांट बताओं जो मानता है आभिरतको उससे, जो

هُوَ مِنْهَا فِي شَكِّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿۲۱﴾ قُلْ

उसकी तरफ़से शकमें है. और तुम्हारा रभ हर अकका निगरां है (२१) केह दो कि

ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَسْبِقُونَكُمْ ۗ وَمِنَ

दुछाई दे कर देभ लो उनकी जिनको तुम लोगोंने भयाल कर लिया है अल्लाहके भिलाफ़, कि नहीं मादिक हैं वोह जरां भरके,

دَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ شَرِكٍ

आस्मानोंमें और न जमीनमें, और नहीं है उनका दोनों जगहमें कोई हिस्सा,

وَمَا لَهُ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيرٍ ﴿۲۲﴾ وَلَا تَتَّقِعْهُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا

और नहीं है अल्लाहका उनसे कोई पुश्ते पनाह (२२) और न काम आयेगी सिफ़ारिश उसके यहाँ, मगर जिस

يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا

داہلے گے اے دوسرے پر بات. کہیں گے کمزور ہوتے

لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿۳۱﴾ قَالَ الَّذِينَ

لوگ، اُنہیں جو بڑے بنے تھے، کہ اگر تو نہ ہوتے تو ہم ہوتے ایمان والے (۳۱) کہنے لگے جو

اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعُوا آمَنُ صَدَدْنَكُمْ عَنِ الْهُدَىٰ

بڑے بنے تھے اُنہیں جو کمزور ہوتے تھے، کہ “کیا ہم روکا تھا تمہیں ہدایت سے ?

بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ﴿۳۲﴾ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُوا

باہد اس کہ آ چکی تھی تمہارے پاس، بلکہ تو بڑے مجرم تھے” (۳۲) اور بول پڑے جو اب تھے

لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكْرَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُونََنَا أَنْ

اُنہیں جو بڑے بنے تھے، کہ “بلکہ رات دن کی راز بازی تھی، جبکہ تو لوگ بڑے ہت کرتے تھے ہمیں، کہ

تُكْفِرَ بِاللَّهِ وَتَجْعَلَ لَهُ أَندَادًا وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لِلْمَآسِرَاؤِ

ہم نہ مانیں اللہ کو، اور بنا اے اس کے مدد مکی بیل.” اور دین میں شرم آئے، جب دہ لیا

الْعَذَابِ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَعْلَىٰ فِي آعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ

اڑا ہوا ہے۔ اور ہم نے اعلیٰ دیکھی تھی اُن کی گردنوں میں، جنہوں نے انکار کیا تھا۔ نہ

يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۳۳﴾ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ

لوگ تہے مگر جیسی کرتے تھے (۳۳) اور نہ لے ہم نے کسی آبادی میں کوئی ڈر سنانے والا،

إِلَّا قَالِ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَفَرُونَ ﴿۳۴﴾ وَقَالُوا نَحْنُ

مگر یہ کہ “کہنے لگے اُس کے پت ہارے، کہ ہم جس اے کے ساتھ تو لوگ لے گئے لے مکر ہیں” (۳۴) اور کہنے لگے، کہ “ہم

أَكْثَرُ أَمْوَالِ الْأَوْلَادِ ۖ وَمَا نَحْنُ بِبَعْدِ بَيْنِ ۖ قُلِ اتَّ رَبِّي

بہت سے مال اور اولاد میں۔ اور ہم ان کے پیچھے نہیں ہیں” (۳۵) جواب دے دو، کہ “بے شک

يَبْسُطُ الرِّمْقِ لِسِنِ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَكِنَّ أَكْثَرِ النَّاسِ لَا

میرا رہ کھاتا کرتا ہے روٹی کو جس کے لیے یہ ہے، اور تھی لے داتا ہے،” لیکن بہت سے لوگ نہ

يَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾ وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا

جانتے (۳۶) اور نہ ہیں تمہارے مال نہ اولاد، جو نکلنے والے سب تمہیں ہم کے پاس لے دے،

رُفَىٰ إِلَّا مَنْ أَمِنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ

मगर जो ईमान लाया, और बियाकतके काम किये, उनके लिये दो गुना धवाब है, जो

بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرُفَاتِ آمِنُونَ ﴿۳۵﴾ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي

उन्होंने अमल किये, और वोह आलाखानोंमें हैं अमनो अमानसे (३७) और जो कोशिश करें हमारी

الْبَيْتِ مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ﴿۳۸﴾ قُلْ إِنْ

आयतोंमें हरानेके लिये, वोह अजाबमें धर लिये जायेंगे (३८) केह दो कि बेशक

رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا

मेरा रब कुशादा इरमाअे रोजी, जिसके लिये याहे अपने बन्दोंसे, और तंगी डाले जिसके लिये याहे. और जो कुछ

أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿۳۹﴾ وَيَوْمَ

भैरात किया तुमने, तो वोह और देगा तुम्हें. और वोह सभसे बेहतर रोजी देनेवाला है (३९) और जिस दिन

يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ أَهْوَأَ لَكُمْ كَانُوا

कि उठायेगा उन सबको, फिर इरमाअेगा इरिशतोंको, कि क्या यही तुम्हें मा'भूद

يَعْبُدُونَ ﴿۴۰﴾ قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيِّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ

जानते थे (४०) उन्होंने अर्ज किया कि पाकी है तेरी, तू हमारा दोस्त है, न कि यह लोग. बल्कि यह

كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ﴿۴१﴾ قَالِیَوْمَ لَا

पूजा करे थे शैतानोंको. उनके बोहतेरे उन्हीके मानने वाले हैं (४१) तो आज नहीं इप्तिथार

يَسَلُّكَ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا

डोगा तुममेंसे किसीको, किसीके नफअका न नुकसानका. और हम कहेंगे उन्हें जिन्होंने अंधेर

دُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿۴۲﴾ وَإِذَا تَشَلَّى

मथाया था, कि यथो जहन्नमका अजाब, जिसको तुम जुटलाते थे (४२) और जब तिलावत की जाती

عَلَيْهِمْ أَيْتْنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ

हैं उन पर हमारी आयतें साइ साइ, बोव पडे कि नहीं हैं यह, मगर अक शप्स, याहते हैं कि रोक दें तुम्हें

عَمَّا كَانُوا يَعْبُدُ آبَاءَكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَأْفٌكَ مُفْتَرِيٌّ وَ

ईससे, जो पूजापाट करते थे तुम्हारे बापदादा. और बोले, कि "नहीं है यह, मगर गढा हुवा बोहतान." और

قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿۴۳﴾

केल दिया काफ़िरोने उकको, जब आ गया उनके पास, “कि नहीं हे यह मगर भुला जाहू” (४३)

وَمَا آتَيْنَاهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

और नहीं दी थीं हमने उन्हें कुछ किताबें जिसे पढ़ते हों, और न ही भेजा था हमने उनकी तरफ़ तुमसे पहले

مِنْ نَذِيرٍ ۖ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا مَعَشَارَ

कोई दर सुनानेवाला (४४) और जुटवाया था जो उनसे पहले थे. और यह नहीं पलोंचे दस्वां छिस्सा उसका

﴿۴۴﴾

مَا آتَيْنَاهُمْ فَكَذَّبُوا رَسُولِي ۖ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۖ ﴿۴۵﴾ قُلْ إِنَّمَا أَعْطَمْتُ

जो दिया था हमने उन्हें, फिर जुटवा दिया मेरे रसूलोंको.. और कैसे बूँठ नागवारी मेरी (४५) केल दो, कि “में नशीहत करता हूँ

بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلِي وَفَرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ ۖ وَمَا

तुम्हें अकेल बातकी, कि भउे हो जाओ अल्लाहके लिये दो दो, और अलग अलग, फिर सोचो”... कि तुम्हारे

بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جُنَّةٍ ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ

पास आनेवालेमें कोई जूनन नहीं हे. वोह नहीं हें मगर दर सुनानेवाले तुम्हें, सप्त अजाब

شَدِيدٍ ۖ ﴿۴۶﴾ قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ

से आगे (४६) केल दो, कि “जो मैं ने मांगा हो तुमसे कोई अज्र, तो वोह तुम्हीं रभ लो. नहीं हे मेरा अज्र मगर

اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ ﴿۴۷﴾ قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ

अल्लाह पर. और वोह दर चील पर निगरां हे” (४७) कलो, कि “बेशक मेरा रभ डालता हे दिवमें उक.”

عَلَامِ الْغُيُوبِ ۖ ﴿۴۸﴾ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيهِ الْبَاطِلُ وَمَا

गैबोंका बडा जाननेवाला (४८) केल दो, कि “उक आ गया, और बातिलका न धर सिरा, न

يُعِيدُ ۖ ﴿۴۹﴾ قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَىٰ نَفْسِي ۚ وَإِنِ

उधर” (४९) केल दो, कि “अगर मैं गुमराह होता, तो भडकता अपने बुरेको. और अगर मैं

اهْتَدَيْتُ فَبِإِذْنِ اللَّهِ إِلَىٰ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۖ ﴿۵۰﴾ وَلَوْ تَرَىٰ

छिदायत पर हूँ, तो उसके सबभ जो वही इरमाता हे मेरे पास मेरा रभ, बेशक वोह सुननेवाला नजदीक हे” (५०) और कही देभो

إِذْ قَرِعُوا قَلْبَ قَوْمٍ وَ أَخَذُوا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ ﴿۵۱﴾ وَقَالُوا

जब धबराहटमें पडे वोह काफ़िर, तो कही भयाव नहीं. और पकड लिये गअे नजदीक जगहसे (५१) और भोदने लगे

أَمْثَابِهِ ۚ وَأَنَّىٰ لَهُمُ التَّنَادُ شَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۗ وَقَدْ كَفَرُوا

कि हम मान गये उसको, और कहां उन्हें कुछ पाना, दूर जगह पड़ोय कर (पर) हावांकि बिवाशुभल ष-कार कर

بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْدِرُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۗ وَجِيلٌ

दिया था उसका पलले. और गैबकी उडाते फिरते हैं, दूर ही दूरसे (पउ) और आड डल

بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ ۗ

दी गठ उनके दरमियान, और जो वोड याडते हैं उसके दरमियान, जैसा किया जा युका हे उनके शयओंसे पडले.

إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مَُّرِيبٍ ۗ

बेशक वोड थे शकमें परे डूअे (प४)



सूरअे फ़ातिर मकिकथ्या

नामसे अल्लाडके बडा मडरभान बअशनेवाला

आयात ४प रुकूअ ५

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِئَةِ رُسُلًا

सारी षुबियां अल्लाडकी, बनानेवाला आस्मानों और जमीनका, कर देनेवाला इरिशतोंको कासिद,

أُولَىٰ أَجْنَعَةٍ مِّثْلِي وَثَلَاثَ وَرُبْعَ ۗ يَزِيدُنِي الْخَلْقَ مَا يَشَاءُ ۗ

परवाले, दो दो, तीन तीन, यार यार. वोड बढाअे आफ़रीनशमें जो याडे.

إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۗ ۑ مَا يَفْتَحُ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ

बेशक अल्लाड डर याडे पर कुदरतवाला हे (१) जो कुछ षोल दे अल्लाड लोगोंके विये कोठ

رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ۗ

रहमत, तो कोठ रोकनेवाला नहीं हे उसका. और जो कुछ रोक दे, तो नहीं हे कोठ छोडनेवाला उसका उसके बा'द.

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۗ ے يَا أَيُّهَا النَّاسُ أذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۗ

और वोडी इज्जतवाला डिक्मतवाला हे (२) अे लोगो ! याद करो अल्लाडकी ने'मतको अपने ऒपर.

هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرُدُّكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ لَوْلَا

क्या कोठ पैदा करनेवाला हे अल्लाडका बेगाना, कि रोजी दे तुम्हें आस्मान और जमीनसे. नहीं हे

إِلَّا هُوَ ۗ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ۗ ۓ وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ

कोठ मा'बूद सिवा उसके. तो तुम कहां औंधाअे जा रहे हो (३) और अगर यह लोग जुटलाअे तुम्हें, तो बेशक जुटलाअे गअे रसूल

۱۲

مَنْ قَبْلِكَ ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿۱۶﴾ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ

تुमसे पहले, और अल्लाह हीकी तरफ लौटाये जायेंगे सारे काम (४) ये लोगो ! बेशक अल्लाहका वा'दा

اللَّهُ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرُّكُمْ بِاللَّهِ الْعُرُورُ ﴿۱۷﴾

हीक है, तो न धोका दे तुम्हें दुनियावी जिन्दगी.. और न धोका दे तुम्हें अल्लाहकी तरफ भडा धोकेबाज शैतान (५)

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوا لَهُ عَدُوًّا ۗ إِنَّ اللَّهَ يَدْعُوا حِزْبَهُ

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो उसको बनाये रभो दुश्मन. वोह इसी लिये बुलाता है अपनी जम'इयतकी

لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ﴿۱۸﴾ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ

कि सभ हो जायें जहन्नमियोंसे (६) जिन्होंने कुफ़ किया, उनके लिये सप्त

شَدِيدٌ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ

अजाब है.. और जो ईमान लाये और अच्छे काम किये, उनके लिये बप्शिश है, और भडा

۴۷-

كَبِيرٌ ﴿۱۹﴾ أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ

अजह'डे (७) लोक्या वोह भी उसका मुस्ताडिक है, जिसकी भद आ'मावी उसकी आंभमें बली कर दी गई, युना-ये समजने लगा उसे अच्छा, तो बिलाशुभ

مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ

अल्लाह, बेराह रभे जिसे याहे और राह दे जिसे याहे. तो न जाये तुम्हारी जान इन लोगों पर

حَسْرَتٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿۲۰﴾ وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ

अइसोस करनेमें. बेशक अल्लाह जाननेवाला है जो यह लोग करें (८) और अल्लाह है जिसने भेजा

الرِّيحَ فَتُبَيِّرُ سَحَابًا فَسُقْنَاهُ إِلَى بَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ

हवाओंको, तो वोह उठाती हैं बादलको, फिर हम ले गये उसे मुर्दा जमीनवाले शहरकी तरफ, फिर जिन्दगी दी उससे जमीनको

بَعْدَ مَوْتِهَا ۗ كَذَلِكَ نُفُورُ ﴿۲۱﴾ مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ

उसके मर चुकनेके बाद. इसी तरफ कयामतमें उठना है (९) जो याहता हो ईज्जत, तो अल्लाह हीके लिये है

الْعِزَّةَ جَسِيعًا ۗ إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ

सारी ईज्जत. उसीकी तरफ यहे पाकीजा कलिमे, और नेक कामको

يَرْفَعُهُ ۗ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۗ وَ

वोह बुलन्दी देता है. और जो याह करें बुराईयोंकी, उनके लिये सप्त अजाब है. और

مَكْرًا وَلِيكَ هُوَ يَبُورُ ⑩ وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ

ਠਨ ਸਭਕੀ ਥਾਲ ਮਲ੍ਹਾਮੈਟ ਛੋ ਜਾਏਗੀ (੧੦) ਔਰ ਅਲਾਛਨੇ ਧੈਛਾ ਫ਼ਰਮਾਯਾ ਤੁਮ੍ਹੇਂ ਮਿਟ੍ਰੀਸੇ, ਫ਼ਿਰ ਔਕ

تُطْفَةِ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَرْوَاجًا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلَا تَضَعُ إِلَّا

ਕਤਰੇਸੇ, ਫ਼ਿਰ ਕਰ ਢਿਯਾ ਤੁਮ੍ਹੇਂ ਜੋੜਾ ਜੋੜਾ. ਔਰ ਨਛੀਂ ਛਾਮਿਲਾ ਛੋਟੀ ਕੋਠ ਔਰਤ, ਔਰ ਨ ਜਨੀ ਹੈ, ਮਗਰ

بِعِلْمِهِ ① وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ

ਓਸਕੇ ਈਲਮਸੇ. ਔਰ ਨਛੀਂ ਉਮਰ ਢਿਯਾ ਜਾਤਾ ਕੋਠ ਸਨ ਰਸੀਛਾ, ਔਰ ਨ ਘਟਾਯਾ ਜਾਏ ਓਸਕੀ ਉਮਰਸੇ, ਮਗਰ ਸਭ ਔਕ ਕਿਤਾਬਮੇਂ

إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ① وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ هَذَا عَذَابٌ

ਛੇ. ਭੇਸ਼ਕ ਯਛ ਅਲ੍ਹਾਛਕੋ ਆਸਾਨ ਹੈ (੧੧) ਔਰ ਨਛੀਂ ਭਰਾਭਰ ਛੇਂ ਛੋਨੋਂ ਢਰਿਯਾ. ਕਿ ਯਛ ਮੀਛਾ

فَرَأَتْ سَائِغَ شَرَابِهِ وَهَذَا أَمْدٌ أَجَاظٌ وَمِنْ كُلِّ تَأْكُلُونَ

ਸ਼ੀਰੀ ਖ਼ੁਸ਼ਗਵਾਰ ਪਾਨੀ ਵਾਲਾ, ਔਰ ਯਛ ਖ਼ਾਰੀ ਤਲਖ. ਔਰ ਛਰ ਔਕਸੇ ਖ਼ਾਤੇ ਰਛਤੇ ਛੋ

لِحِطَّاطٍ رِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفَلَكَ فِيهِ

ਤਾਝਾ ਗੋਸ਼ਤ, ਔਰ ਨਿਕਾਲਤੇ ਰਛਤੇ ਛੋ ਝੇਵਰ ਜਿਸੇ ਪਛਨਤੇ ਛੋ. ਔਰ ਢੇਭਤੇ ਰਛਤੇ ਛੋ ਕਸ਼ਿਯੋਂਕੋ ਓਸ

مَوَآخِرَ لِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلِعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ② يُولِجُ اللَّيْلَ

ਮੇਂ ਫ਼ਾੜਤੀ ਘੀਰਤੀ ਛੁਠ, ਤਾਕਿ ਤਲਾਸ਼ ਕਰੋ ਓਸਕਾ ਫ਼ੜਲ, ਔਰ ਤਾਕਿ ਸ਼ੁਕ ਅਛਾ ਕਰੋ (੧੨) ਵੋਛ ਸਮੋਤਾ ਹੈ ਰਾਤਕੀ

فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلًّا

ਢਿਨਮੇਂ, ਔਰ ਸਮੋਤਾ ਹੈ ਢਿਨਕੋ ਰਾਤਮੇਂ. ਔਰ ਮੁਸਘਮਰ ਕਰ ਢਿਯਾ ਸੂਰਝ ਔਰ ਥਾਂਛਕੋ. ਛਰ ਔਕ

يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ③ ذِكْرُكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ④ وَالَّذِينَ

ਯਲਤਾ ਰਛਤਾ ਹੈ ਵਕਤੇ ਮੁਅਥਯਨ ਤਕ. ਯਛ ਹੈ ਅਲ੍ਹਾਛ, ਤੁਮ੍ਹਾਰਾ ਪਾਲਨੇਵਾਲਾ, ਓਸੀਕਾ ਮੁਲਕ ਹੈ. ਔਰ ਜਿਨਕੀ

تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَسْتَدْعُونَ مِنْ قَاطِبِ ⑤ إِنَّ تَدْعُوهُمْ

ਢੁਛਾਠ ਢੇਤੇ ਛੋ ਓਸਕੇ ਖ਼ਿਲਾਫ਼, ਨਛੀਂ ਮਿਲਕਥਯਤ ਰਭਤੇ ਖ਼ਜ਼ਰਕੀ ਗੁਛਲੀਕੇ ਓਛਕੇ ਭਰਾਭਰ (੧੩) ਅਗਰ ਓਨਕੀ ਢੁਛਾਠ ਢੇਤੇ

لَا يَسْتَعْوَدُ دُعَاءُكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ⑥ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ

ਛੋ, ਤੋ ਵੋ ਨਛੀਂ ਸੁਨਤੇ ਤੁਮ੍ਹਾਰੀ ਢੁਛਾਠਕੋ. ਔਰ ਅਗਰ ਸੁਨਤੇ, ਤੋ ਕਾਮ ਨਛੀਂ ਆਤੇ ਤੁਮ੍ਹਾਰੇ. ਔਰ ਕਯਾਮਤਕੇ ਢਿਨ

يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ ⑦ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ⑧ يَا أَيُّهَا النَّاسُ

ਈਛਕਾਰ ਕਰ ਢੇਂਗੋ ਤੁਮ ਲੋਗੋਂਕੇ ਸ਼ਿਕਕਾ. ਔਰ ਤੁਮ੍ਹੇਂ ਨ ਭਤਾਏਗਾ ਅਲ੍ਹਾਛ ਖ਼ਬੀਰਕੀ ਤਰਛ (੧੪) ਔ ਲੋਗੋ ! ਤੁਮ ਲੋਗ

﴿١٣﴾

أَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝۱۵ إِنْ يَشَاءُ

मोहताज हो अल्लाहके, और अल्लाह ही बेनियाज उम्हवाला है (१५) अगर चाहे तो

يُدْهِبِكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝۱۶ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝۱۷

ले जाये तुम्हें और ले आये नई मख्लूक (१६) और नहीं है यह अल्लाह पर दुश्वार (१७)

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۗ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ جِلْهَالٍ

और नहीं उठायेगा कोई बोज उठानेवाला किसी दूसरेका बोज. और अगर कोई बोजसे लदी जान, बुलाये बोज बटानेको, तो न

يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۗ إِلَّا مَنْ تَدْرَأُ الَّذِينَ يَتُحْسِنُونَ

बोज उठाया जायेगा उसका कुछ, गो रिश्तेदार हो. तुम उरनेवाला उन्हीको करते हो जो भौंक

رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۗ وَمَنْ تَرَكِيَ فَاِنَّآ يَتْرُكُ

जाये अपने रबका बेदेभे, और पाबन्दीकी नमाजकी. और जो सुथरा हुवा, तो वोह सुथरा होता है अपने ही

لِنَفْسِهِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝۱۸ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝۱۹

लिये. और अल्लाह हीकी तरफ़ फिरना है (१८) और नहीं बराबर है अन्धा, और आंभवाला (१९)

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۗ وَلَا الظُّلُّ وَلَا الْحُرُورُ ۗ وَمَا يَسْتَوِي

और न अंधेरियां और उजाला (२०) और न साया और धूप (२१) और न बराबर हों

الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۗ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا أَنْتَ

जिन्हे और मुहें. बेशक अल्लाह सुननेका फ़ाईदा दे जिसे चाहे. और तुम नहीं हो सुनने

بِأَسْمِعِ مَنْ فِي الْقُبُورِ ۗ إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۗ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ

का फ़ाईदा देनेवाले, धन दफ़न किये हुओंको (२२) तुम तो बस उर सुना देनेवाले हो (२३) बेशक हमने भेजा तुम्हें

بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۗ وَإِنْ مِنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۗ وَ

उकके साथ, मुशामबरी देनेवाला और उर सुनानेवाला. और नहीं है कोई उम्मत, मगर गुजरा उसमें कोई उर सुनानेवाला (२४) और

إِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ

अगर जुटलायें तुम्हें, तो बेशक जुटला चुके हैं जो उनसे पडले थे. लाते रहे उनके पास उनके रसूल

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۗ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝۲۵ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ

दलीलों और सहीफ़ों और रौशन करनेवाली किताबको (२५) फिर गिरफ़्तार किया मैंने उन्हें, जिन्होंने

كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ كَبِيرًا ۝۱۶ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

۱۶ کفر کیا، تو کبھی بڑی میری ناگوار (۱۶) کیا تو نے نہی دیا، کی بیلایوہ اعلیٰ نے اتارا آسمان کی طرف سے

مَاءٍ فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ

پانی، اور نیکالیا ہم نے اس سے کئی رنگ، جڑا جڑا رنگتوں کے اور پہاڑوں سے راستے،

بَيضٌ وَحُمْرٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَايِبٌ سَوْدٌ ۝۱۷ وَمِنَ النَّاسِ

سکھ و سورب رنگارنگ، اور کالے بونگے (۱۷) اور انسانوں میں،

وَالَّذِينَ وَاللَّوْأَبِ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ

اور جنہوں اور بونگوں میں، الگ الگ رنگ ہیں جیسی طرف۔ اعلیٰ سے ڈرتے ہیں

مِنَ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۝۱۸ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۝۱۹ إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ

اس کے بندوں سے سیکھ آگلیم لوگ۔ بے شک اعلیٰ گلہوالا مگررت فرمانےوالا ہے (۱۸) بے شک جو تیلوات کرتے

كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

اعلیٰ کی کتاب کو، اور پابندی کی نماز کی، اور پیرات کیا جو ہم نے انہیں روزی دی، چھپا کر اور دیکھا کر،

يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورًا ۝۲۰ لِيُؤْفِقَهُمْ أَجْرَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّنْ

وہ سبھی اہمیدوار ہیں جیسی تیارت کے جو ہرہاد نہ لگی (۲۰) تاکہ پورا پورا دے انہیں ان کی مقررہ چیزیں، اور زیادہ دے انہیں

فَضْلِهِ ۝۲۱ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝۲۲ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ

اپنے فضل سے۔ بے شک وہ مگررت فرمانےوالا کفر فرمانےوالا ہے (۲۱) اور جو وہی لکھ ہم نے تومباری طرف کتاب،

هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۝۲۳ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ

وہ بیکھل لہی دورست ہے، تریک کرنےوالی اپنے سے آگلی کتابوں کی۔ بے شک اعلیٰ اپنے بندوں سے یکنن ہرہادار

بَصِيرٌ ۝۲۴ ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا

نیراں ہے (۲۴) اور وارث بناوا ہم نے کتاب کو انہیں، جن کو یوں لیا ہم نے اپنے بندوں سے۔

فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۝۲۵ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۝۲۶ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ

تو کوئی ان کا آگلیم ہے اپنے اوپر، اور کوئی درمیانہ یالک۔ اور کوئی آگے ہٹ جانےوالا

بِأَذْنِ اللَّهِ ۝۲۷ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝۲۸ جَدَّتْ عَدَاتِ

بلاہوں میں اعلیٰ کے ہک سے۔ یہ ہڈا لہی فضل ہے (۲۷) ہمیشہ رکھنے کے آگ،

يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۗ وَ

दाभिल होंगे जिसमें, पडनाअे जअेंगे उसमें कंगन सोनेके और मोती. और

لِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿۳۳﴾ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا

उनका लिबास उसमें रेशमका (उ३) और भोल पडे कि सारी उभ्र अल्लाहको, जिसने दूर करमा दिया उभसे

الْحُزْنَ ۗ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿۳۴﴾ الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ

रंजको. भेशक हमारा रभ यकीनन मअिंरत करमानेवाला कद्र करमानेवाला हे (उ४) जिसने उतारा हमें उहरनेके काभिल घरमें

مِنْ فَضْلِهِ ۗ لَا يَسْتَأْذِنُ فِيهَا النَّصَبُ وَلَا يَسْتَأْذِنُ فِيهَا الْغُوبُ ﴿۳۵﴾

अपने इजलसे. नही पछोंयती हमें उसमें कोर तक्कीक, और न लगती हे उसमें कोर थकान (उ५)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۗ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا

और जिन्होंने कुक किया उनके लिये जहनमकी आग हे. न कजा आअेगी उन पर कि भर जअें, और न

يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۗ كَذٰلِكَ نُجْزِي كُلَّ ۖكُفُوْرٍ ﴿۳۶﴾ وَهُمْ

उल्का किया जअेगा उनसे अजाभे जहनम. र्सी तरड हम भदला देते हें उर पकें नाशुकेंको (उ६) और वोड

يَصْطَرِحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا

बिल्लाअेंगे उसमें, कि परवरदिगारा निकाल दे हमें, कि करें हम नेकी उसके भिलाक, जो हम किया

نَعْمَلْ ۗ أَوَلَمْ نَعْمَرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرُ وَجَاءَكُمْ النَّذِيرُ

करतेथे. क्या नही ही थी तुम्हें उअ ? कि सबक लासिल करता जिसमें जिसको सबक लेना छोता, और आ युका था तुम्हारे पास उर सुनानेवाला.

فَذُوقُوا نَسْمَ الظَّالِمِينَ ۗ مَنْ نَصِيْرٌ ﴿۳۷﴾ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ

अभ मजा यभते रछे, कि अंधेरवालोंका कोर मददगार नही (उ७) भेशक अल्लाह जाननेवाला हे गैभको आस्मानों

وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۳۸﴾ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ

और जमीनके. भेशक वोड जाननेवाला हे सीनोंवाली भातको (उ८) वोही हे जिसने बनाया तुम्हें

خَلْقًا فِي الْأَرْضِ ۗ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۗ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِيْنَ

जानशीन अगलोंका जमीनमें. तो जिसने कुक किया, तो उसका कुक हे. और न भढाअेगा काकिरोंको

كُفْرَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ اِلَّا مَقْتًا ۗ وَلَا يَزِيدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرَهُمْ اِلَّا

उनका कुक उनके रभके यहां, मगर भेजारीकी. और न भढाअेगा काकिरोंको उनका कुक, मगर

خَسَارًا ﴿۳۹﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ كُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ

نوکسان (۳۷) کہہ دو کہ جسرا بتاؤ؟ کہ تمہارے بناوے شریک جنکی توم دواڈ دے او اءلاڈکے

اللَّهُ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ

مبلاک، مآ دیاؤ کہ کما پءدا کیا اونوںنے زمیانسے؟ یا اونکی کول شیکت ہے آاسمانوںمے.

أَمْ اتَيْنَهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنَاتٍ مِّنْهُ بَلْ إِنَّا نَعِدُ الظَّالِمُونَ

یا دمنے دے رپی ہے اونھ کیتا، تو وول उसسے کيسی دلیل पर हें. बलिके नहीं वा'दा दते अंधेरवाले

بَعْضَهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ﴿۴۰﴾ إِنَّ اللَّهَ يُمْسِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ

अक दूसरेको, मगर धोकेका (४०) भेशक अءलाड रोकें है आसमानों और जमीनको

أَنْ تَرُودَا وَلَئِن زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِي ۗ ط

कि डिल न सकें.. अगर डिल पडें, तो नहीं रोक सकता उनहें कोर, अءलाडके भा'द.

إِنَّكَ إِنْ كُنَّ حَلِيمًا غَفُورًا ﴿۴۱﴾ وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن

भेशक अءलाड डिलमवाला मकिरत वाला है (४१) और कसम भाई उन लोगोंने अءलाडकी, अपने कसमोंमें जोरकी, कि अगर

جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ أَحَدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا

आया उनके पास कोर डरानेवाला, तो जरूर हो कर रहेंगे ज्यादा डिदायतवाले किसी दूसरी उभतसे. फिर जब

جَاءَهُمْ نَذِيرٌ قَا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿۴۲﴾ اسْتَكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ

आ गया उनके पास डरानेवाला, तो नहीं भडी उनमें मगर नकरत (४२) भडा बनना जमीनमें, और भुराई

السَّبِيِّ ۗ وَلَا يَجِئُ الْمَكْرُ السَّبِيِّ إِلَّا بِأَهْدَىٰ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا

की यालभाजी करना, और नहीं उतरती भुरी यालभाजी, मगर अपने ही ठिपर. तो क्या ठन्तिआर कर रहे हें वही

سُنَّتِ الْأَوَّلِينَ ۗ فَلَنْ نُّجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا وَلَكِنْ نُّجِدَ

अगवोंके दस्तूरका. तो डरगिज न पाओगे तुम अءलाडके दस्तूरमें कोर तढीली.. और डरगिज न पाओगे

لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ﴿۴۳﴾ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ

तुम अءलाडके कानूनमें उलट डेर (४३) कया सैर नहींकी उनहोंने जमीनमें, कि दभें कि कैसा

كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَلُوا أَشْدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَمَا

डुवा अजाम उनका, जो उनसे पडले थे, डलवांकि वोल ज्यादा जोरदार थे उनसे, और नहीं

كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ

હે અલ્લાહ, કિ હરા દે ઉસે કોઈ ચીઝ આસ્માનોં ઓર ન ઝમીનમેં.

إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۗ ﴿۳۶﴾ وَلَوْ يُوَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا

બેશક વોહ ઈલ્મવાલા કુદરતવાલા હે (૪૪) ઓર અગર ધરપકડ કર દે અલ્લાહ લોગોંકી, જો કમાઈકી ઉન્હોંને,

تَرَكَ عَلَى ظَهْرِهَا مِنْ دَابَّةٍ ۗ وَلَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

તો ન છોડા હોતા ઝમીનકી પીઠ પર કોઈ ચલનેવાલા, લેકિન વોહ તો ઢીલ દે રહા હે ઉન્હેં એક મુકરર

مُسْتَىٰ ۗ فَلَمَّا أَجَاءَ أَجَلُهُمْ قَاتَنَ اللَّهُ كَاتِبَ عِبَادِهِمُ بِصِبْرٍ ۗ ﴿۳۷﴾

વક્ત તક. ફિર જબ આ ગયા ઉનકા વક્ત, તો બેશક અલ્લાહ અપને બન્દોંકા નિગરાં હે (૪૫)

۳۶
۱۲

سُورَةُ يَسٍ ۙ مَكِّيَّةٌ ۙ ثَلَاثُونَ آيَاتٍ ۚ

સૂરએ યાસીન મક્કિયા

નામસે અલ્લાહકે બડા મહરબાન બખ્શનેવાલા

આયાત ૮૩ રુકૂઅ ૫

يَسٍ ۙ ۱ وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ۙ ۲ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۙ ۳ عَلَىٰ

યા-સીન (૧) કસમ હે હિકમતવાલે કુરઆનકી (૨) બેશક તુમ રસૂલોંસે હો (૩)

صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۙ ۴ تَنْزِيلِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۙ ۵ لِيُنذِرَ قَوْمًا

સીધી રાહ પર (૪) ઉતારા હુવા ઈઝ્ઝતવાલે રહમવાલેકા (૫) કિ ડર સુનાઓ ઉસ કોમકો,

مَا أَنْذَرُوا آبَاءَهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۙ ۶ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ

જિસકે બાપદાદે નહીં ડરાએ ગએ, તો વોહ બેખબરીમેં પડે હેં (૬) ચકીનન ઠીક ઉતર ગઈ બાત ઉનકે

أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۙ ۷ إِنَّا جَعَلْنَا فِي آعْنَاقِهِمْ أَغْلًا

બોહતેરોં પર, તો વોહ ન માનેંગે (૭) બેશક હમને ડાલ દિયા ઉનકી ગરદનોંમેં તોક,

فَرَىٰ إِلَىٰ الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمَحُونَ ۙ ۸ وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ

કિ વોહ ઠોડી તક ચઢે હેં, તો વોહ રહ ગએ મુંહ ઉઠાએ (૮) ઓર બના દિયા હમને ઉનકે આગે

أَيْدِيهِمْ سَدًّا ۙ ۹ وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا ۙ ۱۰ فَأَعْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا

એક રોક, ઓર ઉનકે પીછે એક રોક, ફિર ઢાંક દિયા ઉન્હેં, કિ વોહ દેખ ન

يُبْصِرُونَ ۙ ۱۱ وَسَاءَ عَلَيْهِمْ أُنذَرَتْهُمْ أَمْ لَمْ يُنذِرْهُمْ لَا

સકેં (૯) ઓર ચકસાં હે ઉન પર, ખ્વાહ ડરાયા તુમને ઉન્હેં, યા ન ડરાયા, વોહ ન

